ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

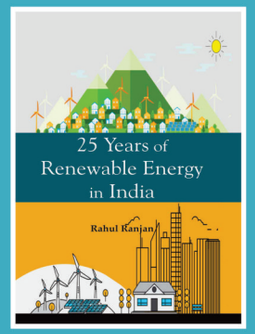

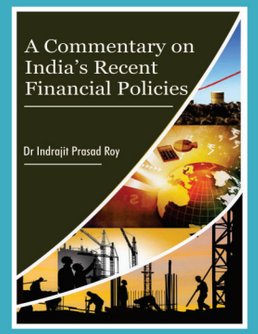

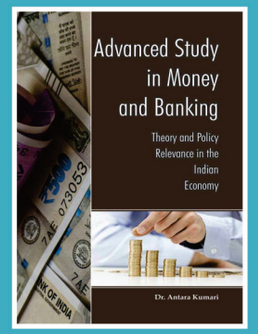

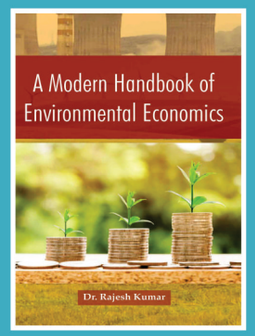

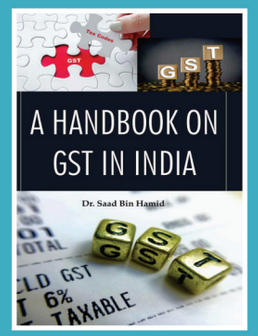

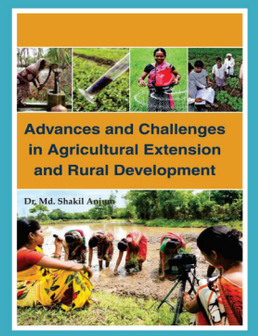

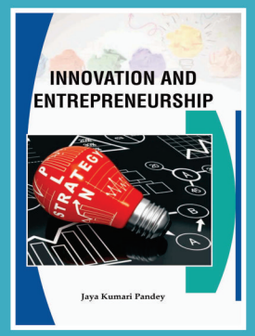

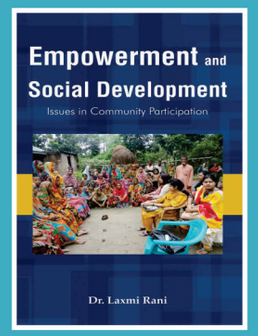

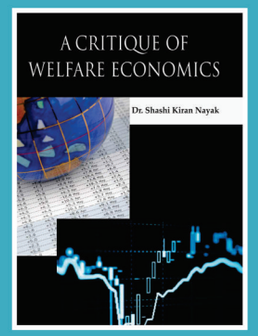

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधि कांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुनः पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंक्ड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वामी विवेकानंद का व्यंजन प्रेम–डॉ. अमरेन्द्र कुमार 1
महात्मा गाँधी के भारत में शरूआती दौर के आन्दोलन (1917-1918)–मोहन लाल 4
अमरकांत का उपन्यास साहित्य : अभिव्यक्ति कौशल संबंधी परम्परागत एवं नवीन प्रयोगों की अवधारणा
–डॉ. यदुवीर सिंह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 8
नई शिक्षानीति में संस्कृत भाषा कि उपादेयता–डॉ० उषा नागर 13
पुलिस प्रशासन-संगठन, समस्या और सुझाव–डॉ० शेषाराम मीणा 18
वैदिक वाङ्मय में अर्थचिन्तन–डॉ0 आशा सिंह रावत 23
नाटककार भवभूति की कृतियों में पर्यावरण चिन्तन–डॉ0 बाबूलाल मीना 30
गाँधी के सर्वोदय दर्शन में विकेन्द्रीकरण की अवधारणा–आशीष कुमार सिंह 36
राजनीतिक सामाजीकरण एवं विकास : एक अध्ययन–कृष्णा बैठा 39
सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में पारिवारिक वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन–मनु सिंह; डॉ. मंजू शर्मा 44
ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की समीक्षा–किरण कुमारी; डॉ. संजय बुदेला 48
महिलाओं द्वारा अपने प्रति होने वाले अपराधों के प्रतिकार की स्थिति–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ. श्रीमती रीना तिवारी 51
बौद्धिक सम्पदा का अधिकार और इसके संरक्षण के प्रयास–जितेन्द्र भारती 55
वेदों में ज्योतिर्विज्ञान–डॉ० भगवानदास जोशी 58
नई शिक्षा नीति में गृह विज्ञान शिक्षा का भविष्य–डॉ० आभा रानी 63
शैक्षिक नीतिशास्त्र का स्वरूप और विचार–अजय कुमार पटेल 66
अमरकंटक अंचल में पर्यटन की संभावना एवं विकास–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 69
बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास–शशि शेखर द्विवेदी; मनीष कांत 78
मुगलकालीन विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारतीय महिलाओं की स्थिति–आशु त्यागी 84
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 88
मुक्ति प्राप्ति का भक्ति-मार्ग–डॉ० सुनील कुमार शुक्ल 90
विश्वशान्ति: स्वधर्म एक माध्यम–डॉ० क्षमा तिवारी 93
उ०प्र० में बौद्ध स्थलों पर पर्यटन प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन–डॉ० अनूप कुमार सिंह 97
संयुक्त राष्ट्रसंघ और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 101
हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 103
प्राथमिक शिक्षक एवं कक्षा-कक्ष : एक चुनौती–डॉ. राकेश कुमार डेविड; डॉ. संजीत कुमार साहू; डॉ. शोभना झा 106
कोरोना वैश्विक महामारी के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–अर्चना कुमारी 109
'समकालीन सामाजिक परिदृष्य में प्रत्ययवाद का महत्व'–डॉ० ब्रिजेन्द्र कुमार त्रिपाठी 112
आधुनिक समाज में माता-पिता की महत्वाकांक्षा और बच्चों की मानसिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ. रूमा कुमारी सिन्हा 114
लाल शकरकंद : अनाज का विकल्प–डॉ. शिखा चौधरी 116
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न–डॉ. ज्योति गौतम 119
बौद्ध वाङ्मय और बुद्ध की प्रासंगिकता–अर्चना 122
लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति–श्रीमती अर्चना वर्मा; श्रीमती लक्ष्मी देवी 125
इतिहास के आइने में स्त्री विमर्श–डॉ० शैलेन्द्र सिंह 129
स्वयंभू रचित पउमचरिउ में स्त्री चेतना–कुमकुम पाण्डेय 132
लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और दलितों की भागीदारी–लाल चन्द पाल 135
शोषण मुक्ति हेतु संघर्षरत : स्त्री जीवन (दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में)–आशीष खरे; डॉ. ज्योति गौतम 139

सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान–अवन्तिका 143
वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना–डॉ. रत्नेश शुक्ल; रोहणी तिवारी 147
वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष–डॉ. शाद अहमद 152
हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान–पवन कुमार वर्मा 155
प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि–डॉ. नलिनी सिंह 158
उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन–रणवीर ठौलिया 161
पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान विशेष संदर्भ : भील –डॉ. अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत 166
भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 171
70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियां एवं चुनौतियां–डॉ. ऋतेष भारद्वाज 176
शिक्षा और समाज का अन्त: सम्बंध–डॉ. निशा वालिया 181
बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन–विजया वैजयंती 184
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृष्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 188
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 190
भारत एवं हिन्द महासागर की भू राजनीति–सत्येन्द्र सिंह 194
भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–डॉ. संजय कुमार; डॉ. सरिता 198
भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन–डॉ. (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता 201
वर्तमान परिदृष्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया–डॉ. दिलावर सिंह 205
कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार–डॉ. पिंकी पुनिया 209
रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन–डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता 214
श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन–सीमा चिनप्पा; डॉ. वेदप्रकाश मिश्र 217
देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व–शिवानी सिंह 222
नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह–काजल 225
मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना–डॉ. शेलेन्द्र कुमार 227
कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी–डॉ. प्रदीप कुमार 229
भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज–अनिल कुमार यादव 233
21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में–डॉ. रामरती; ममता 237
वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता–मिथिलेश; हेमचंद यादव 242
भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियां : एक भौगोलिक अध्ययन–गोविन्द सिंह 244
इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन–डॉ. निशा जम्वाल 250
पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता एक विमर्श : समस्या, समाधान–अनिता कंवर 252
माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फपुर जिले के विशेष संदर्भ में) –प्रतिभा सिंह; डॉ. पी. एन. मिश्र 257
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन –वैशाली उनियाल; प्रो0 (डॉ.) सुरेश चन्द्र पचौरी 260
राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना–अनिकेत पीयुष सिंह 266
औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 269
पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–आभा मिश्रा; डॉ. विजय कुमार वर्मा 272
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन –ज्योत्सना रमोला; प्रो0 (डॉ.) सुरेश चन्द्र पचौरी 278
बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान–डॉ. संदीप कुमार 285
अखिलेष कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या–सपना रानी 289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न–चेतन कुमार 291
बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंत: संबंध–शुभांगी 293
मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता–सुमन देवी 302
कोविड़ 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण–डॉ. चन्द्रा चौधरी 305
हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार–बिन्दु डनसेना; डॉ. बी एन जागृत 308
गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका–सुदर्शन सिंह; डॉ. स्वीटी श्रीवास्तव 310
लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण–वकील शर्मा 314
पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व–डॉ. योगिता मकवाना 319
अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग–राजकिरण चौधरी 322
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो. अनिल धर 326
सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन–डॉ. रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 330
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ. कुमारी ज्योति 332
चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ. सर्वेश चंद्र शुक्ल 335
चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका–अभिषेक कुमार तिवारी 339
पर्यावरण दर्शन और नैतिकता–मुकेश कुमार 342
गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन–डॉ. अभय कुमार सिंह 346
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां–सुनीता जांगिड 350
बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार 353
किन्नर विमर्श–सनोज पी आर 357
मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तिनों के विशेष संदर्भ में–मनीषा मिश्रा; डॉ. अमिता शुक्ला 359
सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता–ललिता देवी 363
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन–आलोक कुमार तिवारी 366
नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता–संदीप कुमार 369
मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार–संजीव कुमार पाण्डेय 371
रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन–कृपा शंकर 374
महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ. अजित कुमार पाठक 376
स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति–कुमारी अंजना 379
भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण–फरीद आलम 381
संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद–डॉ. मुकेश कुमार 385
प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना–प्रो. रमेश के. पर्वती 389
छत्तीसगढ़ के श्रमिको मे कोविड माहमारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में) –संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ. रीना तिवारी 391
राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा–प्रो. मन्जुनाथ एन. अंविग 397
कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका–तिलकराज गौड़; डॉ. शालीनी यादव 400
भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन–मो. जाहिद शरीफ 405
भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा–घनश्याम 408
पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन–मयंक भारती 411
दक्षेस : महत्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता–संजय कुमार 414
प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार–सुशील कुमार 418
ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 422
भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष–रंजना कुमारी गुप्ता 426
समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य–काजल कुमारी सिंह 431

संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य: स्थानम्–डॉ. सुमन कुमारी; डॉ. रामजी मेहता 434
आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद–मन्नु कुमार शर्मा 437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन–अभिषेक दुबे; डॉ. (श्रीमती) स्मिता मिश्रा 441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35। को हटाने की शक्ति रखते हैं?–डॉ. रीता कुमारी 444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन–डॉ. हेमन्त सिंह कंवर 448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन–सुनील कुमार 451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा केंवटिन–श्री मिथलेष सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त–डॉ. पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला 460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)–सीमा जांगिड़ 468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन–प्रमोद कुमार वर्मा–डॉ. मृदुला भदौरिया 476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा–प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार 482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन–डॉ. सौरभ मालवीय 487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ. मंजु नावरिया 491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण–डॉ. अंबादास केत 496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन–डॉ. रमेश एस. जगताप 500
बाल श्रम-एक विश्लेषण–सतीश कुमार 503
भूमण्डीलकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न–डॉ० विनोद मीना 512
ओटीटी प्लेटफार्म्स का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण–सोनी कुमारी 520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ–सुधा कनकानवर; डॉ. श्रीनिवास मूर्ति 523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव 526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध–डॉ. संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी 531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता–डॉ. योगेन्द्र कुमार धुर्वे 535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अवदान–सरिता; प्रो. बी.एल. जैन 538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान–सोमेश गुंजन 541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्ष–डॉ. दीप्ति वाजपेयी; गुंजन 543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन-अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार–डॉ. इन्दु तिवारी 547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति–अनिरुद्ध कुमार 550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृष्य का एक अध्ययन आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में –डॉ. डुंगरसिंह मुजाल्दा 553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. प्रशान्त शुक्ला 563
हिदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण–डॉ. प्रेरणा गौड़ 568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श–डॉ. धीरज प्रकाश जोशी 571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. सौम्या शंकर; सुनील कुमार 573
शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ. वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण 584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन–पूजा जैन 588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण–डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर 591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन–डॉ. मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा 594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन–डॉ. रिया तिवारी; श्री डोमार यादव 600

वैश्वीकरण और इलैक्ट्रानिक बैंकिग सेवाओं की उपयोगिता–डॉ. संजय खत्री 606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ. आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी 608
तुलसीदास की समन्वय भावना–डॉ. राजमोहिनी सागर 613
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चन्द्र कान्त पांडा 617
वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)–ऋषिकेश चौहान 626
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव–चन्दना शर्मा 629
वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृष्य; हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 632
आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० आस्था दीवान 638
जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं–डॉ० अभिषेक आनन्द 640
संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र–डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु.० संजू नागर 644
हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता–डॉ० तारु एस० पवार 647
शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ)
–डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार 650
काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन–डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' 655
भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:–डॉ० हिमा गुप्ता 657
आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरुप : एक विश्लेषण–डॉ० स्मिता सिंह 660
हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 665
स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० अनिल कुमार 668
आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य–डॉ. युवराज कुमार 672
आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार–डॉ० ऋचा सिंह 679
"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत)
–डॉ. गोकुल क्षीरसागर 684
करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना–डॉ० बिजेंद्र कुमार 687
गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार–सुनीता; डॉ० रामरती 692
गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार–डॉ० पियुष कुमार सिंह 695
जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण–भावना देवी 697
पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढ़ंग से चित्रित करता सुनीता
जैन का उपन्यास "बिंदु"–नीलम देवी 699
बाल धरोहर एवं समाज कल्याण–डॉ. शिवसिंह बघेल; डॉ. के. बालराजु 703
गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ–वीना 707
जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
–राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र 709
नई कविता में सौंदर्य-चेतना–डॉ० संतोष धोत्रे 713
भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश खरे 717
मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास–गुरदीप सिंह 720
मानवाधिकार और आदिवासी–प्रा० प्रशांत देशपांडे 724
महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका–अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ. सुनील कुमार सेन 729
रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन
–अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र 732
भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति–रमनदीप कौर 736
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व–डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 740
वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 743

जूड़ो में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव–चन्द्रशेखर बांधें; डॉ. राजीव चौधरी 749
बंगला काव्य और गांधी जी–डॉ. राम बिनोद रे 754
मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास–डॉ० रितु तिवारी 764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया–कृष्णा कुमारी 767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में "आत्मविश्वास"–श्रीकृष्ण जांगिड़; डॉ. अखिलेश जोशी 770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन–यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद 774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण–प्रा. डॉ. दिग्विजय टेंगसे 777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गौं का महत्व–डॉ. चंद्रकांत पंडा 780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन–अजय कुमार 788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता–प्रदीप कुमार तिवारी 792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य–डॉ. तृप्ता 795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ–डॉ. सुरेन्द्र मिश्र 798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह 804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन–मोनिका भाटी 808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ. श्रद्धा हिरकने 811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन–मनीश कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा 818
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व–स्मिता शर्मा; डॉ. चित्रा 826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में)–बर्नाली नाथ 829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंर्तसंबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका–डॉ. आदित्य कुमार मिश्रा 832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो. अनिल धर 836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृष्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर
–डॉ. संजय सिंह महर; डॉ. हेमंत बिष्ट 840
छत्रपति शिवाजी महाराज की दृष्टिकोन से स्त्री–डॉ. हेमलता काटे 854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व–आलोक तिर्की 857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व–हामिद अली 860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन–डॉ. जोनी इम्मानुएल तिरकी 863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय 866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन–प्रभात आनन्द 868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य–चन्द्रभान सिंह 872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना–श्रीमति मीतू बरसैंया; डॉ. श्रीमती आँचल श्रीवास्वत 878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य–डॉ. स्मिता राय; डॉ. भूपेन्द्र बहादुर सिंह 881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन–डॉ. शालिनी गुप्ता 886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संर्दभ में)–डॉ. ममता रात्रे 890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में–प्रेमलता 893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव–डॉ० अवधेश कुमार यादव 895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव–डॉ० जागीर नागर 898
समाज में निरन्तर दोयम दर्जे की अनुभूति–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 903
पंजाब नाटशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच–डॉ० सुनीता शर्मा 909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका–शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा 914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च–डॉ. प्रीतम रुज 916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य–अमित डोगरा 921

प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा–डॉ. नारायण 924

स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान–डॉ. आरती कुमारी 929

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका–डॉ. गीता सहाय 932

नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ 934

नई शिक्षा नीती और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन–डॉ. कविता सालुंके 936

नई शिक्षा नीति 2020–डॉ. बबीता बी. शुक्ला 939

शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार–डॉ. नागोराव शालिग्राम डोंगरे 943

नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव–डॉ. माधव के. वाघमारे 946

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टीक्षेप–श्रीमती थोरात अनिता भास्कर 949

भारत की नई शिक्षा नीति - 2020–डॉ० रंजना राजेश सोनावने 952

चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन–डॉ० साहेबराव यू. अहिरे; डॉ० जी. बी. चौधरी 955

नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव एक अनुशीलन–डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण 959

राष्ट्रीय शिक्षा निती 2020 का शिक्षको को सक्षम बनाने मे योगदान–प्रताप भाऊसाहेब आत्रे 964

चित्रा मुद्गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)–डॉ. शशी पालीवाल 967

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–अनूप कुमार सिंह 971

श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 974

परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान–डॉ० रागिनी राय 977

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि–डॉ० शिवा श्रीवास्तव 981

वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि–उज्ज्वल चतुर्वेदी 985

न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य–डॉ० शैलेश शुक्ला 988

चार्वाक दर्शन–डॉ० सरोज राम 993

असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व–रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी 997

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व–डॉ. मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह 1002

भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ–डॉ० विमल कुमार लहरी 1010

आदिवासी विमर्श–डॉ० नसरीन जान 1014

राजस्थान मे बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन–डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा 1016

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवाधिकार–डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन 1019

स्ववित्तपोशित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–अखिलेश कुमार मौर्य 1022

निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव –अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1026

ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में–डॉ० अम्बिका उपाधयाय 1029

आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में–कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी 1033

हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श–डॉ० भगत गोकुल महादेव 1039

भारत की जनजातियों मे जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. हरिचरण मीना 1041

स्ववित्तपोशित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कृपा शंकर यादव 1044

उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन–कुसुम देवी 1050

भारत और नेपाल संबंध–डॉ. वंदना वाजपेयी 1053

महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास–विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिंत 1057

अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध–मिथिलेश कुमार मिश्र 1060
उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के माध्यमिक स्तर के अनाथ व सनाथ छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1063
पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना–मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1068
उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी 1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी 1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह 1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव 1086
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा 1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ. आकाश वर्मा 1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयो में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ. संजय डी. रायबोले 1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ. परिस्मिता बरदलै 1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ. आकाश वर्मा 1104
"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ. मनीष कुमार मिश्रा 1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका–डॉ० सुनिता कुमारी 1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी 1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्दु आलोक 1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार 1126
रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ. अलका कुमारी 1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ० श्री कमलजी 1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह 1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल 1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ. महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी 1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ० मनोज कुमार 1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्ध निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी 1158
मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ० राघवेन्द्र यादव 1162
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा 1165
बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार 1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां–संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय 1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम 1177
प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ० संजीव 1181
''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल 1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ. आशा तिवारी ओझा 1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ० सीमा सहदेव 1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी 1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज 1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह 1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ. (प्रो.) जे. के. पटेल 1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो. प्रभात कुमार; कल्पना देवी 1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ. प्रशान्त कुमार; डॉ. दुर्वेश कुमार 1221
रीती काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर 1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सुशीला; कु० आरती 1230

भारतीय लोकतत्रं के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ. जगबीर सिंह 1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल 1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह 1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 1250
भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन–महेश कुमार 1256
प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीतिः निरंतरता और परिवर्तन–डॉ० जय कुमार झा 1259
मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतो की महत्ताः समीक्षा–डॉ. जया भारती; डॉ. संदीप कुमार वर्मा 1262
भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन–कविता 1266
मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि–डॉ. रूपेश कुमार चौहान 1271
निधर्नता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में–डॉ. प्रियंका एन. रूवाली; उपमा द्विवेदी 1275
''उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन''–प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा 1279
युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका–श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा 1283
भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–विकास 1287
आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति–डॉ. अनिल कुमार तेवतिया 1290
टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध–डॉक्टर मधु लोमेश 1295
प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा–प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल 1298
विवेकी राय कृत उपन्यास शवेत-पत्रः एक ऐतिहासिक दस्तावेज–विभा रीन 1303
हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल 1306
सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में–डॉ0 सत्येन्द्र कुमार 1309
ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 1312
प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्व–डॉ. विनय कुमार मिश्र 1317
अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति–स्वर्णिम शिप्रा 1322
पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन–प्रवीण पाण्डेय 1326
पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान–अजीत राम चौधारी; डॉ. महेन्द्र चौधरी 1329
भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका –असीम कुमार शर्मा 1332
भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व–डॉ. नवनाथ सर्जेराव शिंदे 1336
पं. दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ. हरबंस सिंह 1339
क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगो के जनजीवन के विशेष संदर्भ में–सुनील सिंह 1341
किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –महेन्द्र कुमार; डॉ. जीतेन्द्र प्रताप 1346
पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं–डॉ. पूर्णिमा आर 1352
सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास–डॉ. अनिता सिंह 1356
ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन (बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में) –डॉ. अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय 1360
समकालीन विमर्शों के समक्ष चुनौतियाँ–संजय सिंह यादव; डॉ. विनोद कुमार 1374
स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी–गीता आर्या 1377
दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया – मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण–डॉ. रेखा ओझा 1381
इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)–डॉ. विलास अंबादास सालुंके 1386
हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श–डॉ. दायक राम 1388
भारत में मातृभाषा का महत्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ. सोनू कुमार 1392
भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन–डॉ. राकेश रंजन 1396

दृष्टिकोण

छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद–डॉ. काजल मोइत्रा; डॉ. रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला 1401
दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन–कुमारी संगीता कुशवाहा 1405
भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)–आशा नागर 1408
पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार–डॉ. मनोज सिंह यादव 1414
ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व–रजनी कुमारी 1417
न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ. विश्वेश 'वाग्मी' 1419
सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य–हरदीप कौर 1423
संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य–डॉ. मधुलता बारा; हेमलता पटेल 1425
शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन–डॉ. किरण कुमारी 1428
अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल–डॉ. मुक्ति मिश्रा 1432
वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव–विकास रंजन 1439
विज्ञान एवं अध्यात्म–डॉ. रमाकान्त पाण्डेय 1443
फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य–डॉ. हरिकिशोर यादव 1447
भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याये–डॉ. हितैषी सिंह 1453
भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–विक्रम बहादुर नाग; डॉ. अज़ीज़ुर्रहमान खान 1456
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता–अश्वनी कुमार; किशोर कुमार 1460
भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका–डॉ. ब्रहम प्रकाश 1465
परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य–अजय कुमार मिश्र 1468
बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण–अनामिका मौर्या 1471
गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज–डॉ. सुरजीत कौर 1474
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श–डॉ. कविता मीणा 1477
भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन–रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह 1480
ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–विपिन सहरावत 1491
ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका–ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल 1494
आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 1497
इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन–डॉ० गौतम सोनी 1499
शहीद भगतसिंह–कुसम राय 1504
जीवन कौशल शिक्षा एक: नए दृष्टीकोन–डॉ. कविता सालुंके; प्रा. ज्योती लष्करी 1506
आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम–डॉ० नीलम 1509
मानव जीवन में योग–डॉ० पूजा कुमारी 1514
भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण-एक जटिल प्रक्रिया–डॉ० अशोक कुमार मिश्र 1517
अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग–डॉ० सीमा सिंह 1519
स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ–डॉ. अपराजिता जॉय नंदी 1525
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन–डॉ० विष्णु कुमार 1527
भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी–डॉ० स्मिता कुमारी 1532
शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व–आलोक तुली 1537
सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता –अमित कुमार; आर. के. अर्चना सदा सुमन टुदी; डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा 1541
चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेशपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया–डॉ. अजय कुमार सिंह 1545
21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान–डॉ. गरिमा सक्सेना 1548

बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक श्रोतों की संभावना–जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ. काजल मोईत्रा 1551
भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन–डॉ. मनोज कुमार अग्रवाल 1554
प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)–पीयूष पाण्डेय 1558
विचित्र नाटक में छंद योजना–मनिंदर जीत कौर 1562
समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. हेमलता बोरकर वासनिक 1565
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना–प्रतिभा झा 1572
हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण–राजीव वर्मा 1575
कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता–डॉ० धनंजय कुमार दुबे 1580
श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन–प्रवीण कुमार 1586
सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त–मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी 1590
महावीरचरिते तात्कालिक – समाजसंस्कृती–अनिता कौशिक: 1594
गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्–संजय: कुमार: 1599
सिक्कों की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व–अंजू मलिक 1602
शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा–मनीष कुमार; डॉ. बिमान पॉल 1605
स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका–प्रमोद कुमार; डॉ. पारन गौड़ा 1609
पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद–पूनम 1612
हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण–सुमन 1616
प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण–डॉ. मनोज कुमार; डॉ. विकास कुमार 1619
प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में–डॉ. आरती यादव 1622
शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के सन्दर्भ में–डॉ. रश्मि पंत 1625
सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अरविंद 1630
कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन–संतोष कुमार साह 1634
राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप–नारायण सिंह 1637
साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ–रमेश चौहान; डॉ. एस.के. पवार 1641
"राष्ट्रीयता एवं भारतीय भाषाएँ"–डॉ. तारु एस. पवार 1645
भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन–धीरज कुमार पारीक 1647
मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में–गुरप्रीत कौर 1651
यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति–डॉ. सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा 1653
कुण्ठा : बद्री सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में–सुषमा देवी 1658
प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज–पूजा 1661
तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण–चन्दन कुमार 1664
मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि–डॉ. अमिता तिवारी 1668
राजस्थान मे जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस–विनोद कुमार 1671
पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज–स्वाति चौधरी 1680
योगोपनिषदों में उद्धत प्रणव: एक विवेचन–नम्रता चौहान; डॉ. शाम गणपत तिखे 1682
मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्व: एक अध्ययन–नेहा सैनी; डॉ. शाम गनपत तीखे 1688
स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिका: महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में–अखिलेश कुमार विश्वकर्मा 1693
चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज–दीक्षा कोंवर 1697
भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध–डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह 1700
कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान–मीना देवी 1703
कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्त्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन–अरुण कुमार 1706
राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिका: एक अवलोकन–डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि 1709

दृष्टिकोण

राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ–सत्य प्रकाश पाण्डेय 1715

प्रवासी मजदूरों का अपने घर की और हो रहा पलायन: इससे निर्मित चुनौतीयां एवं अवसरों का अध्ययन–डॉ. लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे 1719

भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति–संजू चलना बजाज 1723

सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन–डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी 1727

छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ–डॉ. स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू 1732

बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ. संतोष प्रियदर्शी 1736

भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका–डॉ० विजय कुमार 1741

भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन–चिरन्जी लाल रैगर 1745

भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी–होशियार सिंह 1750

इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता–कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ० बिमान पॉल 1753

1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अमित कुमार; राजेश कुमार 1757

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ–चुन्नीलाल 1761

चंद्रकांता उपन्यास ''कथा सतीसर'' में कश्मीर समस्या के विविध आयाम–सुखबीर कौर 1764

बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक–दीपक कुमार झा 1766

मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन–अलका सिंह 1772

किसान अस्मिता का संकट और 'फाँस'–डॉ० बिजेन्द्र कुमार 1777

ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना–डॉ० बिजय रवानी 1781

आर्थिक विकास और पर्यावरण–श्रीमती कविता 1785

नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन–डॉ० रवींद्र कांबले 1789

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन–श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ० संजीवनी राजेश महाले 1792

नई शिक्षा नीती 2020 के साथ पढेगा भारत–डॉ० दयाराम दुधाराम पवार 1798

वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ–मांडवी दीक्षित 1801

हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या

डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर, जिला-बलरामपुर-रामानुजगंज (छ0ग0)

शोध-सारांश

बंधुआ मजदूरी की प्रथा देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग रूपों में मौजूद रही है और उसे भिन्न-भिन्न नाम दिये गये हैं। कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में इसे 'जीता', उड़ीसा में 'गोती', बिहार में 'कानिया' और राजस्थान में इसे 'सागड़ी' कहते हैं। दासता के इस रूप को समाप्त करने और बंधुआ मजदूरों का पता लगाकर उन्हें मुक्त कराने, उनका पुनर्वास करने के लिए 'बन्धित श्रम पद्धति (उत्सादन) अधिनियम, 1976' भी पारित किया गया है। लेकिन आज लगभग 43 वर्षों के बाद भी इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए इस अधिनियम का कारगर कार्यान्वयन नहीं हो पाया है। जिसके कारण देश की कई जनजातियों मे आज भी यह अमानवीय प्रथा विद्यमान है। बंधुआ मजदूरी का आज के लोकतांत्रिक समाज में पाया जाना संपूर्ण मानवता पर प्रश्न चिन्ह पैदा करता है। निश्चय ही यह स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। बंधुआ मजदूरी की प्रथा का मूलभूत कारण यह है कि आदिवासी अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कर्ज लेते हैं, लेकिन समय पर उस कर्ज की अदायगी नही कर पाते। फिर आसमान छूती व्याज दरों के कारण यह कर्ज तेजी से बढ़ता जाता है, जिसे धनाभाव के कारण सामान्य आदिवासी चुका नही पाता और अंतत: उसे बंधुआ मजदूर के रूप में मालिक की सेवा में लगना पड़ता है। एक बार इस दुष्चक्र में फंसने के बाद बंधुआ मजदूर की मुक्ति आसान नही होती। वह गुलामों जैसा जीवन जीने को विवश हो जाता है। यह समाज की बहुत बड़ी विडंबना है।

Keywords : संस्थागत, असंगठित क्षेत्र, ऋणग्रस्तता, बेगार, अशिक्षा, जागरूकता, ठेकेदार, साहूकार, शोषण, व्यापारी, प्रयास।

भारत में बंधुआ मजदूरी की प्रथा विभिन्न रूपों में आज भी विद्यमान है। हालांकि परंपरागत बंधुआ मजदूरी हमारे देश में प्रतिबंधित है, लेकिन व्यावहारिक तौर पर ग्रामीण इलाकों में इस प्रथा के शिकार लाखों आदिवासी आज भी अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर हैं। इन मजदूरों में ज्यादातर आदिवासी ऐसे हैं जो अपने पूर्वजों द्वारा लिये गये ऋणों के बदले आज भी बंधुआ मजदूरी करने को विवश हैं। इन बंधुआ मजदूरों का जीवन अत्यंत निम्न स्तर का है और ये जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। ये आधुनिक शिक्षा और रोजगार के साधनों से भी वंचित हैं। बंधुआ मजदूरी के उन्मूलन का कोई संस्थागत प्रयास न होने के कारण यह कुप्रथा पहुँच विहीन आदिवासी इलाकों में अधिक पाई जाती है। बंधुआ मजदूरों में अधिकांश संख्या भूमिहीन श्रमिकों की है। आय का कोई वैकल्पिक साधन न होने के कारण ये शोषण के दुष्चक्र को नही तोड़ पाते और लगातार पिसते रहते हैं।

जनजातीय जनसंख्या का अधिकांश भाग मुख्यत: असंगठित श्रमिकों के रूप में कार्य कर अपना जीवन-यापन करता है। ऐसे श्रमिकों में अन्य मजदूरों के साथ प्रवासी व बंधुआ मजदूर भी शामिल हैं। श्रम मंत्रालय के एक दस्तावेज के अनुसार वर्ष 1988-89 में बंधुआ मजदूरों की संख्या 2.25 लाख से भी अधिक थी। हालांकि सरकारी आंकड़ों से इतर व्यावहारिक स्तर पर यह संख्या काफी अधिक है। नियमित मॉनीटरिंग न होने के कारण यह संख्या लगातार घटती-बढ़ती रहती है। नीति आयोग के कार्यक्रम मूल्यांकन संगठन के एक अनुमान के अनुसार बंधुआ मजदूरों की कुल संख्या में 83 प्रतिशत मजदूर अनुसूचित जाति और जनजाति से संबंधित थे। हालांकि अनुसूचित जाति की तुलना में जनजातियों में बंधुआ मजदूरी कुछ कम पायी जाती है, लेकिन फिर भी उनका स्तर चिंताजनक है। वे आदिवासी समूह जो बाहरी लोगों के संपर्क में आ चुके हैं और उनके साथ लंबे समय से रह रहे हैं उनमें यह प्रथा अधिक देखने को मिलती है। इसका कारण बाहरी लोगों का उनके जीवन में हस्तक्षेप है।

बंधुआ मजदूरी की प्रथा देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग रूपों में मौजूद रही है और उसे भिन्न-भिन्न नाम दिये गये हैं। कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में इसे 'जीता', उड़ीसा में 'गोती', बिहार में 'कानिया' और राजस्थान में इसे 'सागड़ी' कहते हैं। दासता के इस रूप को समाप्त करने और बंधुआ मजदूरों का पता लगाकर उन्हें मुक्त कराने, उनका पुनर्वास करने के लिए 'बन्धित श्रम पद्धति (उत्सादन) अधिनियम, 1976' भी पारित किया गया है। लेकिन आज लगभग 43 वर्षों के बाद भी इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए इस अधिनियम का कारगर कार्यान्वयन नहीं हो पाया है। जिसके कारण देश की कई जनजातियों मे आज भी यह अमानवीय प्रथा विद्यमान है। बंधुआ मजदूरी का आज के लोकतांत्रिक समाज में पाया जाना संपूर्ण मानवता पर प्रश्न चिन्ह पैदा करता है। निश्चय ही यह स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। बंधुआ मजदूरी का सबसे प्रमुख कारण जनजातीय परिवारों की आर्थिक स्थिति का अत्यंत दयनीय होना है। वर्षों पहले ली गयी ऋण राशि चुकाने में असमर्थ परिवार कर्ज देने वालों के गुलाम हो जाते हैं और फिर जीवन भर वे लाचारी और निराशा का जीवन जीते हैं। कई क्षेत्रों में तो यह प्रथा वंशानुगत भी बन जाती है। पिता के लिये गये ऋणों का भार उसका पुत्र ले लेता है और फिर ताउम्र वह भी बंधुआ मजदूर के रूप में कार्य करने को विवश हो जाता है।

बंधुआ मजदूरी की ही भाँति बेगारी की प्रथा भी आदिवासी समाज में व्यापक पैमाने पर पायी जाती है। बेगारी का अर्थ है- श्रमिक को उसके श्रम का उचित मूल्य न देना। प्राय: देखा जाता है कि व्यापारी और साहूकार अधिक लाभ लेने के चक्कर में आदिवासियों को न्यूनतम मजदूरी भी नहीं देते। यहाँ तक कि पुरुषों और महिलाओं को एक ही कार्य के लिए अलग-अलग दर से भुगतान किया जाता है। औद्योगिक ईकाइयों, खदानों और सरकारी निर्माण कार्यों में ठीकेदारों द्वारा बेगार कराना आज भी जारी है। चूँकि जनजातीय इलाके प्राय: आवागमन के साधनों की पहुँच से बाहर हैं, इसलिए समुचित पर्यवेक्षण के अभाव में यह समस्या गंभीर बनी हुई है। बेगारी की समस्या भारत के केवल ग्रामीण अंचलों में ही व्याप्त नही है बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी यह विभिन्न रूपों में विद्यमान है। यहां तक की सरकारी तंत्र में भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो श्रमिकों से बेगार लेते हैं। काम के निर्धारित घण्टों से अधिक कार्य लेकर भी मजदूरों से बेगार कराया जाता है। निगरानी का कोई व्यवस्थित तंत्र न होने के कारण इसका उचित तरीके से आंकलन भी नही हो पाता। पूंजीवादी तंत्र और बाजार के दबाव ने बेगार को और अधिक बढ़ाया है। अधिकतम लाभ प्राप्त करने की आकांक्षा से मजदूरों से अधिक काम लिया जाता है जबकि उन्हें पूरी मजदूरी नही दी जाती। अज्ञानता के कारण आदिवासी इसका विरोध नही कर पाते और शोषण के शिकार रहते हैं। निजी तंत्र में यह स्थिति अधिक चिंताजनक है। वहां पर ठेकेदार और बिचौलिये मजदूरी का पैसा हड़प जाते हैं। औद्योगिक प्रतिष्ठान, व्यापारी और साहूकार भी मजदूरों से जमकर बेगार लेते हैं। इन साधन संपन्न व्यक्तियों द्वारा बेगार कराया जाना निश्चित रूप से चिंता पैदा करता है।

बंधुआ मजदूरों का अधिकांश हिस्सा असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत होने के कारण स्थिति की गंभीरता का आंकलन आसान नहीं होता है। कृषि क्षेत्र में कार्यरत बँधुआ मजदूरों की हालत दयनीय है। स्थिति तब और भयावह हो जाती है जब यह समस्या पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती रहती है। बँधुआ मजदूर किस तरह सुबह से शाम तक मालिक के काम में खटता रहता है इसे 'गगन घटा घहरानी' उपन्यास के एक उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। लेखक उपन्यास में जागो सेवकिया के संबंध में लिखता है-''जागो अब सुबह अँधेरा रहते ही उठता और अधनींदी आँखें मलता-मलता बैलों को खोलता। हल-बैल लिए मालिक के खेत में पहुँचता। पसीना बहाता और पोंछता, काम में जुटा रहता। भूखा जागो दोपहर एक बजे तक हल जोतते हुए पसीना गिराकर उसके खेतों को सींचता। खाने के लिए मालिक एक पाव सत्तू दे देता, लुकमा। जागो फिर हल जोतना शुरू करता जब तक कि सूरज डूब न जाय। लेकिन अभी उसके आराम करने का वक्त नहीं। -- अभी बैलों के आराम करने का वक्त है। मालिक के बैल को आराम की जरूरत है लेकिन मनुष्य जागो को नहीं।''[1] यह स्थिति ग्रामीण बंधुआ मजदूरों के संदर्भ में आसानी से देखी जा सकती है। वे सुबह से शाम तक मालिक के काम में लगे रहते हैं, काम में जरा भी ढील हुई तो गालियां दी जाती हैं। साल में शायद ही कभी ऐसा मौका आता हो जब उन्हें छुट्टी दी जाती हो। ऊपर से बंधुआ मजदूरों पर मालिक तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। कई बार तो उनकी स्थिति पशुओं से भी बदतर हो जाती है। 'नदी के मोड़ पर' उपन्यास का कचरू मालिक के अत्याचार से विक्षिप्त सा हो गया है। उसके अंदर मालिक का डर इस कदर बैठ गया है कि वह बदहवास होकर सोचता है-''देखो-देखो, मालिक आ रहा है, मालिक आ रहा है। मुझे उससे बचाओ, बचाओ, वरना वह मुझे मार डालेगा। -- देखो-देखो, मालिक की भैंस को तेंदुआ उठाकर ले गया, अब वह मेरी खाल उधेड़ देगा। महीनों भूखा रखेगा। मुझे खाना चाहिए, खाना। कोई मुझे खाना दो। -.. मुझे भूखे मत मारो मालिक, आखिर मैं भी तो इंसान हूँ। - साले हरामजादे कुत्ते की औलाद, तू कब से आदमी बन गया रे! साले, भैंस के बदले तू क्यों नहीं चला गया तेंदुए के पेट में!''[2] यह समाज की कड़वी सच्चाई है। बंधुआ मजदूरों को ठीक से भोजन का भी वक्त नहीं दिया जाता है। उन्हें भोर होते ही मालिक की सेवा में हाजिर होना पड़ता है और फिर वे भूखे-प्यासे दिनभर मालिक की सेवा में खटते रहते हैं। उनके लिए काम के कोई घण्टे निर्धारित नही हैं। आराम करने का कोई समय नही है। उत्सव में शामिल होने का कोई दिन नही है।

बँधुआ मजदूरी का सबसे बड़ा कारण ऋणग्रस्तता है। ऋणों का भुगतान समय पर न करने की वजह से धीरे-धीरे मालिक मजदूर का आर्थिक शोषण करने लगता है। कर्ज चुकाने में असमर्थ मजदूर के पास गुलामी, लाचारी और निराशा का जीवन जीने के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता। कई बार तो ऋणों का जाल एक सोची-समझी साजिश के तहत फैलाया जाता है। 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में लेखक मुण्डा जनजाति के संबंध में लिखता है- ''कमाई की उपज खा जाते हैं मुण्डा। अगली बुआई के समय यदि बँटाई पर भी खेती करें तो बीज चाहिए। बैल चाहिए। खाद-पटवन चाहिए। यह सब मिलता है साहू या बेचू तिवारी के सौजन्य से। परंतु अनाज के बदले वापस अनाज नहीं, पैसा माँगते हैं जमींदार! जब तक पैसा नहीं चुकता तब तक मुण्डा को जमींदार के घर बँधुआ बनिहार बनकर खटना होता है।''[3] खेती-किसानी से आज भी अधिकांश आदिवासी परिवारों को पेट भर भोजन नही मिल पाता। ऐसे में उन्हें मालिक के कहे अनुसार चलना पड़ता है। उनकी बेगारी करनी पड़ती है। अगर ऋणी रहकर बेगारी न करें तो उन्हें मालिकों द्वारा तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता है। कई बार समाज का साथ भी उन्हें नही मिलता और ऋणी होने के कारण उन्हें समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है।

अब जैसे-जैसे समाज में जागरूकता आ रही है, लोग बँधुआ मजदूरी की प्रथा के खिलाफ आवाज उठाने लगे हैं। 'गगन घटा घहरानी' में जागो सेवकिया को जमींदार के आदमियों द्वारा जबरन उठाकर ले जाने पर सोनाराम प्रतिवाद करते हुए कहता है- ''लेकिन गाँव के दूसरे लोगों को तो रोकना चाहिए था। कमजोर-बीमार आदमी को ले गए। फिर मारा-पीटा क्यों? बेगार करा-करा के दम ले लेंगे।''[4] सोनाराम इसी उपन्यास में आगे लुपुंगा के प्रधान टूना उरांव से बँधुआ मजदूरी का विरोध करते हुए कहता है-''कौन सेवकिया बनना चाहता है? कौन किसी की बेगारी करना चाहता है? सेवकिया बनना कोई नहीं चाहता। जागो दादा को तो हमारे ही समाज, हमारे ही धरम के नियम से मरे हुए ससुर के किरिया-करम के लिए कर्ज लेना पड़ा था, समाज को दारू-हँड़िया पिलाने के लिए। सबने खाया होगा, सबने पिया होगा। इसलिए दण्ड भोगना है तो पूरा समाज भोगे। अकेले-अकेले कोई क्यों भोगेगा?''[5] यहां पर यह बात महत्वपूर्ण है कि आदिवासी अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए कर्ज लेते हैं, लेकिन समय पर उस कर्ज की अदायगी नही कर पाते। फिर आसमान छूती व्याज दरों के कारण यह कर्ज तेजी से बढ़ता जाता है, जिसे धनाभाव के कारण सामान्य आदिवासी चुका नही पाता और अंतत: उसे बंधुआ मजदूर के रूप में मालिक की सेवा में लगना पड़ता है। एक बार इस दुष्चक्र में फंसने के बाद बंधुआ मजदूर की मुक्ति आसान नही होती। वह गुलामों जैसा जीवन जीने को विवश हो जाता है। यह समाज की बहुत बड़ी विडंबना है।

ग्रामीण क्षेत्रों में तो बेगारी की प्रथा अत्यंत गंभीर है। अक्सर मजदूरों को उनके श्रम का कम मूल्य दिया जाता है। कई बार तो नकद मूल्य के बदले अनाज इत्यादि दे दिया जाता है, जिसका बाजार मूल्य अत्यंत कम होता है। बेगारी के कारण प्राय: मजदूर कुपोषण और भुखमरी के शिकार हो रहे हैं। बेगारी के

क्षोभ में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास का पात्र काली सोचता है- ''हक की कमाई मांगने पर ठेकेदार के पास पैसे नहीं हैं और हराम की कमाई डकारने वाले दुराचारी लुटेरे परशुराम के लिए पंद्रह हजार! आग घुल रही है काली के मन में। क्या वह इन हरामखोरों की बेगार करने और उनकी गाँड़ धोने के लिए ही पैदा हुआ है? हतक, हतक और हतक! हतक के सिवा कुछ नहीं। ऐसे अन्याय पर उसे क्या करना चाहिए - यह बताने वाला कोई नहीं - न कोई देवी-देवता, न कोई साधु-फकीर, न कोई लीडर-अफसर! हर तरफ अंधेरा है, हर तरफ घुटन!''[6] कहना ना होगा कि इस तरह की व्यवस्था के बीच आदिवासी गहरे संत्रास और पीड़ा से गुजर रहे हैं। आदिवासियों की नई पीढ़ी जो धीरे-धीरे जागरूक हो रहे हैं उनके अंदर इस व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना पनप रही है। इससे समाज के बीच बँटवारे की एक गहरी खाई भी पैदा हो रही है। यह कई बार जातिगत संघर्ष का रूप भी ले लेती है। निश्चय ही यह भविष्य के भारत के लिए अच्छा संकेत नही है।

आज बंधुआ मजदूरी के साथ ही बेगारी की समस्या को जड़ से समाप्त करने की आवश्यकता है। इन समस्याओं से निजात तभी मिल सकती है जब इसके खिलाफ लोग संगठित होंगे। जैसे-जैसे समाज में जागरूकता आयेगी यह प्रथा अपने आप ही समाप्त होती जायेगी। 'रथ के पहिए' उपन्यास में लेखक देवेन्द्र सत्यार्थी इसके समाधान की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं-''लोगों से बेगार लेना तो मालगुजार अपना अधिकार समझता है, यह सब अधिकार तो खत्म करने होंगे। जब तक लोग उफ नहीं करते और गुलामों के समान बेगार देते चले जाते हैं, तभी तक यह बेगार का असूल चालू रहेगा।''[7] इसलिए इस समस्या के पूर्ण उन्मूलन के लिए आज अभियान चलाने की आवश्यकता है। इसके उन्मूलन के लिए संगठित अभियान, मूल कारणों की खोज, पीड़ित परिवारों की मुक्ति व उनका पुनर्वास तथा 'बन्धित श्रम पद्धति (उत्सादन) अधिनियम' के कारगर कार्यान्वयन की जरूरत है। जिन क्षेत्रों में संगठित प्रयासों की आवश्यकता है, वहाँ कार्यकारी मजिस्ट्रेटों को अतिरिक्त शक्तियाँ प्रदान की जा सकती हैं। इसी प्रकार उन व्यक्तियों और संगठनों को भी मदद देने की आवश्यकता है जो इस प्रथा के खिलाफ जनहित में लड़ाई लड़ रहे हैं। आज ग्राम पंचायतों की व्यवस्था हमारे देश में मजबूत हो चुकी है। ग्राम पंचायतों को अतिरिक्त शक्तियां देकर बंधुआ मजदूरी और बेगारी पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकता है।

संदर्भ

1. पाठक, मनमोहन, गगन घटा घहरानी, पृष्ठ 11, द्वितीय संस्करण 2000
2. सदन, दामोदर, नदी के मोड़ पर, पृष्ठ 200, दूसरा संस्करण 1979
3. सिंह, राकेश कुमार, पठार पर कोहरा, पृष्ठ 191, द्वितीय संस्करण 2005
4. पाठक, मनमोहन, गगन घटा घहरानी, पृष्ठ 80, द्वितीय संस्करण 2000
5. वही, पृष्ठ 86
6. संजीव, जंगल जहां शुरू होता है, पृष्ठ 93, प्रथम संस्करण 2000
7. सत्यार्थी, देवेन्द्र, रथ के पहिये, पृ 173, संस्करण 1993